"वापार"

• सचा सउदा हरि नाम है सचा वापारा राम । गुरमती हरि नाम वणजीऐ अति मोल अफारा राम ।

अर्थ:- हे भाई ! परमात्मा का नाम ही सदा साथ निभने वाला सौदा है व्यापार है । ये हरि नाम गुरु की मत पे चल कर कमाया जा सकता है, इसका मूल्य बहुत ही ज्यादा है दुनिया का कोई भी पदार्थ इसकी बराबरी नहीं कर सकता ।

अति मोल अफारा सच वापारा सच वापार लगे वडभागी ।
अंतरि बाहर भगती राते सचि नाम लिव लागी ।

अर्थः- सदा स्थिर प्रभु के नाम का व्यापार बहुत अनमोल है, जो मनुष्य इस व्यापार में लगते हैं वे भाग्यशाली हो जाते हैं । वे मनुष्य अंतरात्मे भक्ति रंग में रंगे रहते हैं, दुनिया के कार्य - व्यवहार करते हुए भी वे भक्ति रंग में रंगे रहते हैं, सदा स्थिर हरि - नाम में उनकी लगन लगी रहती है ।

नदरि करे सोई सच पाए गुर के सबदि वीचारा । नानक नाम रते तिन ही सुख पाइआ साचे के वापारा ।1।

अर्थः- पर, हे भाई ! वही मनुष्य गुरु के शब्द द्वारा विचार करके सदा स्थिर हरि - नाम सौदा हासिल करता है जिस पर परमात्मा मेहर की नजर करता है । हे नानक ! कहः जो मनुष्य परमात्मा के नाम रंग में रंगे जाते हैं उन्होंने ही सदा स्थिर प्रभु के नाम व्यापार में आत्मिक आनंद प्राप्त किया है ।

हउमै माइआ मैल है माइआ मैल भरीजै राम । गुरमती मन निरमला रसना हरि रस पीजै राम ।

अर्थः- हे भाई ! अहंकार और माया की ममता मनुष्य के आत्मिक जीवन को मैला करने वाली मैल है, मनुष्य का मन माया की ममता की मैल से लिबड़ा रहता है । गुरु की मत पर चलने से मन पवित्र हो जाता है

रसना हरि रस पीजै अंतर भीजै साच सबदि बीचारी । अंतरि खूहटा अंम्रित भरिआ सबदे काढि पीए पनिहारी ।

अर्थः- इस वास्ते, हे भाई ! गुरु की मत पर चल के जीभ से परमात्मा का नाम जल पीते रहना चाहिए । जीभ हरि नाम जल पीते रहना चाहिए, इस नाम जल से हृदय तरो - तर हो जाता है, और सदा स्थिर प्रभु की महिमा के शब्द से विचारवान हो जाता है । हे भाई ! आत्मिक जीवन देने वाले नाम जल से भरा हुआ चश्मा कई मनुष्य के अंदर ही है, जिस

मनुष्य की तवज्जो गुरु के शब्द के द्वारा ये नाम जल भरना जानती है वह मनुष्य अंदर के चश्मे में से नाम जल निकाल के पीता रहता है ।

जिस नदरि करे सोई सचि लागै रसना राम रवीजै । नानक नामि रते से निरमल होर हउमै मैल भरीजै ।2।

अर्थः- पर, हे भाई ! वही मनुष्य सदा स्थिर हरि - नाम में लगता है जिस पर परमात्मा मेहर की निगाह करता है । हे भाई ! जीभ से परमात्मा का नाम स्मरण करते रहना चाहिए । हे नानक ! जो मनुष्य परमात्मा के नाम रंग में रंगे जाते हैं, वे पवित्र हो जाते हैं, बाकी की दुनिया अहंकार की मैल से लिबड़ी रहती है ।

पडित जोतकी सभि पड़ि पड़ि कूकदे किस पहि करहि पुकारा राम । माइआ मोह अंतर मल लागै माइआ के वापारा राम ।

अर्थः- पडित और ज्योतिषी, ये सारे ज्योतिषी आदि की पुस्तकें पढ़ - पढ़ के ऊँचा - ऊँचा और लोगों को उपदेश करते रहते हैं, पर ये ऊँची आवाज में किसको सुनाते हैं ? इनके अपने अंदर तो माया का मोह प्रबल है, इनके अपने मन को तो माया की मैल लगी रहती है, इनके सारे उपदेश माया के ही व्यापार हैं ।

माइआ के वापारा जगति पिआरा आवणि जाणि दुख पाई । बिख का कीड़ा बिख सिउ लागा बिस्टा माहि समाई ।

अर्थः- ऐसे मनुष्य को जगत में ये धर्म उपदेश माया के व्यापार की तरह ही प्यारे हैं, और लोगों को उपदेश करता है, पर स्वयं जनम - मरन के चक्र में दुख पाता रहता है । ऐसा मनुष्य सारी उम्र आत्मिक मौत लाने वाला मोह जहर का कीड़ा बना रहता है, इसी जहर से चिपका रहता है, इसी गंद में आत्मिक जीवन समाप्त कर लेता है ।

जो धुरि लिखिआ सोई कमावै कोई न मेटणहारा । नानक नामि रते तिन सदा सुख पाइआ होरि मूरख कूकि मुए गावारा ।3।

अर्थः- परमात्मा ने ऐसे मनुष्य के पिछले किए कर्मों के अनुसार जो कुछ धुर से उसके माथे पर लिख दिया है जगत में आ के ये वही कुछ कमाता रहता है । कोई मनुष्य उसके माथे के उन लेखों को मिटा नहीं सकता । हे नानक ! जो मनुष्य माया के नाम रंग में रंगे रहते हैं वे सदा ही आनंद भोगते हैं, बाकी के वो मूर्ख हैं गवार हैं जो और लोगों को उपदेश कर करके खुद आत्मिक मौत सहेड़ लेते हैं ।

माइआ मोहि मन रंगिआ मोहि सुधि न काई राम । गुरमुखि इह मन रंगीऐ दूजा रंग जाई राम ।

अर्थः- हे भाई ! माया के मोह में इस मनुष्य का मन रंगा जाता है, मोह में फंस के उसको आत्मिक जीवन की कोई समझ नहीं आती । अगर इस मन को गुरु की शरण पड़ के नाम रंग से रंग लिया जाए, तो इससे माया के मोह का रंग उतर जाता है ।

दूजा रंग जाई साचि समाई सचि भरे भंडारा । गुरमुखि होवै सोई बूझै सचि सवारणहारा ।

अर्थः- जब मनुष्य के मन से माया के मोह का रंग उतर जाता है, तब मनुष्य सदा स्थिर हरि नाम में लीन हो जाता है, सदा स्थिर हरि नाम धन से उसके आत्मिक खजाने भरे जाते हैं । हे भाई ! जो मनुष्य गुरु के सन्मुख रहता है वही इस भेद को समझता है । वह सदा स्थिर हरि - नाम से अपने जीवन को सुंदर बना लेता है ।

आपे मेले सो हरि मिले होर कहणा किछ न जाए । नानक विणु नावै भरमि भुलाइआ इकि नामि रते रंग लाए ।4।

(4-570-571)

अर्थः- पर, हे भाई ! जिस मनुष्य को परमात्मा खुद अपने साथ मिलाता है वही परमात्मा को मिल सकता है परमात्मा की अपनी मेहर के अतिरिक्त और कोई उपाय बताया नहीं जा सकता । हे नानक ! जगत, नाम के बिना भटकना में पड़ के गलत राह पर पड़ा रहता है । कई ऐसे भी हैं जो प्रभु चरणों से प्रीति जोड़ के प्रभु के नाम रंग में रंगे रहते हैं ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"